बौद्ध कालीन शिक्षा प्रणाली और भारतीय संस्कृति

डॉ० चन्दा रानी*

भारतीय शिक्षा के इतिहास में ईसा से पूर्व छठी शताब्दी में शिक्षा के क्षेत्र में कुछ परिवर्तन हुए। इस काल को बौद्धकाल कहा जाता है तथा इस शिक्षा को बौद्ध कालीन शिक्षा कहा जाता है। वैदिक धर्म एवं ब्राह्मण–उपनिषद् धर्म के पालन करने वालों में बहुत से अवगुण, अन्धविश्वास, आडम्बर तथा जातीय भेदभाव आदि आ गए थे। इस कारण यह आवश्यक था कि समाज के सदस्यों को धर्म के मूल सिद्धांतों के प्रति प्रबुद्ध किया जाए। इसलिए देश में एक नए सम्प्रदाय का उदय हुआ। जिसे महात्मा बुद्ध के अनुनायियों ने उनके ही नाम से "बौद्ध धर्म" का नाम दिया। इस ध र्म के उभ्युदय, विकास एवं प्रसार के कारण भारतीय शिक्षा का भी विकास हुआ।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक रही है। उत्तरवैदिक काल तक आते–आते आर्यों की कर्म आधारित व्यवस्था परिवर्तित होकर जन्म आधारित व्यवस्था में फलीभूत होने लगी। भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर ब्राह्मण वर्ग का एकछत्र साम्राज्य स्थापित हो गया, निम्न वर्ग को शिक्षा से वंचित कर दिया गया। ब्राह्मणवादी व्यवस्था में शुद्र वर्ग हाशिए पर पहुँच गये जहाँ उनकी स्थिति बद से बद्तर थी। जब भी कोई विचारधारा अति को पार करती है तो दूसरी विचारधारा का आविर्भाव होता है, भारतीय सन्दर्भ में भी ऐसा ही हुआ। जब उत्तरवैदिक काल में कठोर वर्षा व्यवस्था और कर्मकाण्ड की अति हुई तो इसका विरोध प्रारम्भ हुआ। इसी उहापोह की स्थिति में महात्मा बुद्ध का अवतरण हुआ, जिन्होंने कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म के स्थान पर करूणा प्रधान मानवतावादी बौद्ध धर्म की स्थापना की।

महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म और दर्शन पर आधारित एक नवीन शिक्षा प्रणाली जो वैदिक धर्म की कठोर वर्ण व्यवस्था और कर्मकाण्ड के विपरीत समानता प्रेम और करूणा पर आधारित थी का विकास हुआ। इस शिक्षा प्रणाली को आगे चलकर बौद्ध शिक्षा प्रणाली कहा गया।

बौद्ध धर्म मानव जाति विशेष की नहीं बल्कि मानवमात्र की संस्कृति के संरक्षण एवं विकास का पोषक है। यही कारण है कि बौद्ध मठों एवं बिहारों में बौद्ध दर्शन के साथ अन्य धर्मों दर्शनों और संस्कृतियों के अध्ययन की व्यवस्था थी। उस काल में विद्वान प्राचीन साहित्य के संरक्षण और नवीन साहित्य के निर्माण कार्य में लगे थे। साहित्य के संरक्षण के लिए उस काल में बड़े–बड़े पुस्तकालयों का निर्माण किया गया था। बौद्ध धर्म सामाजिक कल्याण की भावना का पक्षधर है। उस समय व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना बहुत बलवती थी और निम्न वर्ग सभी सुविधाओं से वंचित

***स्नातकोत्तर इतिहास विभाग बी0एन0एम0यू0, मधेपुरा।**

था। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में सबसे अधिक बल करूणा और दया पर दिया गया है। बिना करूणा भाव के एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के दुःखों को नहीं समझ सकता।

महात्मा बुद्ध के अनुसार इस संसार के समस्त दुःखों का कारण अज्ञान है। अतः उन्होंने निर्वाण की प्राप्ति के लिए सच्चे ज्ञान के विकास पर बल दिया। भारतीय संस्कृति में वैदिक काल में वेद ग्रंथों के ज्ञान को सच्चा ज्ञान माना जाता था परन्तु बौद्ध धर्म एवं दर्शन में चार सत्यों का वर्णन किया गया है। बौद्ध धर्म में आत्मसंयम, करूणा और दया का सबसे अधिक महत्व है। बौद्धों की दृष्टि से जो इनका पालन करता है वही चरित्रवान है। चरित्र निर्माण के लिए बौद्ध मठों एवं विहारों में छात्रों को प्रारंभ से दस नियमों का पालन कराया जाता था, उन्हें सादा जीवन और विनयपूर्ण व्यवहार करने में प्रशिक्षित किया जाता था और बुरे कर्मों से दूर रखा जाता था।

उत्तरवैदिक काल में जहाँ व्यवसाय की शिक्षा वर्णानुसार दी जाती थी वहीं बौद्ध मठों में छात्रों की योग्यता और क्षमता के आधार पर देना शुरू किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि इस काल में कृषि, पशुपालन, कला–कौशल और वाणिज्य के क्षेत्र में और अधिक वृद्धि हुई। बौद्ध काल में प्रारंभ में तो बौद्ध मठों एवं विहारों में स्त्रियों को प्रवेश नहीं दिया जाता था परन्तु वाद में बुद्ध ने ओनी विमाता महाप्रजापति और अपने शिष्य आनन्द के कहने पर उनको प्रवेश की अनुमति प्रदान की। सहशिक्षा वाले मठों एवं विहारों में केवल स्त्री शिक्षा की ही व्यवस्था की गई थी परन्तु फिर भी बहुत कम बालिकाएँ इनमें प्रवेश लेती थी। संघ के नियमों का पालन करना बालिकाओं के लिए कठिन था।

भारतीय संस्कृति में वैदिक काल में शिक्षा गुरुओं के व्यक्तिगत नियंत्रण में थी, बौद्ध काल में यह संघो के केन्द्रीय नियंत्रण में हो गई जिससे शिक्षा के स्वरूप में एकरूपता आई और उसका प्रशासन सुचारू रूप से हुआ। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में सभी वर्णों के बच्चों को उनकी योग्यता के आधार पर शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया गया। बौद्ध शिक्षण संस्थानों के द्वार सभी के लिए खुले हुए थे। उस समय भारतीय संस्कृति में वैदिक शिक्षा का माध्यम संस्कृत थी जबकि बौद्ध शिक्षा प्रणाली में उस समय की लोकभाषा पालि को शिक्षा का माध्यम बनाया गया। इससे शिक्षा का स्वरूप व्यापक हुआ और समाज के सभी वर्ग शिक्षा से जुड़े।

भारतीय शिक्षा के इतिहास का प्रारंभ बौद्ध शिक्षा प्रणाली में हुआ था। उस काल में मठ और विहार आज के विद्यालयों के अनुरूप विकसित हुए। उच्च शिक्षा के अध्यापन के लिए तक्षशिला नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविख्यात विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ जिनमें देश–विदेश के छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण करते थे। प्राचीन भारत के शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का शिक्षा केन्द्र रहा है। चीनी यात्री ह्वेंगसान लिखते हैं कि इसका संस्थापक कुमार गुप्त था जिसने बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों के प्रति श्रद्धा के कारण इसकी स्थापना करवायी। 5वीं शताब्दी में कुमार गुप्त प्रथम द्वारा अपनी स्थापना से लेकर 13वीं शताब्दी में

मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी द्वारा अन्त किये जाने तक नालन्दा विश्वविद्यालय देश–विदेश में अपने ज्ञान–विज्ञान संस्कृति एवं कला के लिए विख्यात था। इसकी ख्याति भारत के अलावा तिब्बत, चीन, जापान, कोरिया, मंगोलिया, वर्मा, श्रीलंका, जावा, सुमात्रा आदि देशों में भी सामान रूप से थी। ज्ञान–विज्ञान तथा कला के साथ–साथ नालन्दा विश्वविद्यालय के विशालकाय भवन भी उसकी प्रसिद्धि के कारण थे, परन्तु आज उसके अवशेष मात्र बचे है। साहित्य में वर्णित नालन्दा विश्वविद्यालय के इतिहास एवं संस्कृति की पुष्टि उसके पुरावशेषों से होती है।

इतनी सारी विशेषताओं के साथ बौद्ध शिक्षा प्रणाली में कुछ कमियाँ भी थी जैसे कि शिक्षा के उद्दश्यों में संतुलन का आभाव बालोचित शिक्षण विधियों का प्रयोग नहीं कठोर अनुशासन व्यवस्था, स्त्री शिक्षा में ह्रास, सैन्य शिक्षा का आभाव, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के नाम पर बौद्ध धर्म की शिक्षा ये सारी बातें बौद्ध धर्म हमारे भारतीय संस्कृति से दूर करती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से अलगाव के वातावरण का निर्माण कर रही है, जिसने देश में अनेक भेद एवं विषमताओं को जन्म दिया है। हमें वर्तमान में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो न केवल व्यक्ति समाज की समस्याओं का सामाधान कर सके बल्कि समाज में विलुप्त नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना कर सके और यह कार्य बौद्धकाल में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था को अंगीकृत कर किया जा सकता है। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में समानता का वातावरण था, ऊँच–नीच का भेदभाव नहीं था। शिक्षा मुक्त हस्त से आचार्यों द्वारा सुयोग्य पात्र को प्रदान की जाती थी, गुरु शिष्य संबंध परस्पर सामंजस्यपूर्ण और मधुर थे। मठों एवं विहारों में पूर्णतः अनुशासनबद्ध शिक्षा प्रदान की जाती थी। स्त्री शिक्षा तथा शुद्र शिक्षा समान रूप से दी जाती थी। शिक्षा के द्वार सभी वर्णों और वर्गो के लिए खुले थे। स्त्रियों को भी पुरुषों की भाँति समान रूप से शिक्षा प्रदान की जाती थी। अनुसंधानों पर पर्याप्त समय दिया जाता था। नवीनतम अनुसंधानों को प्रेरित किया जाता था। आध्यात्मिक विषयों के साथ–साथ लौकिक विषयों को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया था।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली व्यवहारिक एवं मानसिक थी। बौद्ध शिक्षा में व्यवहार कुशलता उभारने और उसके साथ आदर्शवादिता, शालीनता आदि का अभ्यास करने का उपक्रम चलता था। समय के साथ–साथ परिस्थितियाँ भी बदल गयी है, इसलिए पूर्णतः बौद्ध शिक्षा पद्धति को अंगीकृत करना संभव नहीं है, पूर्णतः उसकी प्रतिमूर्ति स्थापित करना संभव नहीं है परन्तु इतना तो किया ही जा सकता है कि बौद्ध शिक्षा पद्धति का स्वरूप एवं अनुशासन गंभीरतापूर्वक समझा जाए और उसके सार को वर्तमान शिक्षाक्रम में समाविष्ट कर लिया जाए। बौद्ध शिक्षा प्रणाली में शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप ही शिक्षा का पाठ्यक्रम में ऐसे विषय रखे गये थे जिनसे आध्यात्मिकता का विकास होता था वहीं दूसरी ओर व्यवसायिक शिक्षा भी

दी जाती थी ताकि छात्र अपने भविष्य के प्रति चिंतित न रहे। आधुनिक शिक्षा प्रणाली को भी इस विशेषता से युक्त करना होगा, पाठ्यक्रम को इस प्रकार से व्यवस्थित करना होगा जिससे समाज की विकास की गति एवं दिशा निश्चित हो सके। समाज में व्याप्त परंपरागत कुरीतियों, नैतिक मूल्यों के पतन आदि पर नियंत्रण हेतु प्राथमिक स्तर से ही शिक्षा का ऐसा पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों की रचना करनी होगी जिनके माध्यम से इन पर नियंत्रण किया जा सके।

इस प्रकार वर्तमान शिक्षा में बौद्ध शिक्षा का समावेश कर हम वर्तमान समाज को एक बार पुनः सुशिक्षित, सुपोषित एवं सुरक्षित कर सकते हैं। बौद्ध शिक्षा जहाँ तक एक ओर लाखों–करोड़ों लोगों में शिक्षा के माध्यम से प्राण फूँकने में समर्थ है तो दूसरी ओर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की कमियों को दूर करने में मार्गदर्शन कर सकती है।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और इतिहास के नव निर्माण तथा अभ्युत्थान की दिशा में जिन सुधारवादी धार्मिक ग्रन्थों का महत्वपूर्ण योगदान रहा, बौद्ध धर्म का उनमें प्रमुख स्थान है। भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भूगोल और सिन्धु घाटी की सभ्यता के दौरान बनी और आगे चलकर वैदिक युग में विकसित हुई, भारत में बौद्ध धर्म एवं स्वर्ण युग फली–फूली अपनी खुद की प्राचीन विरासत शामिल हैं। इसके साथ ही पड़ोसी देशों के रिवाज, परम्पराओं और विचारों का भी इसमें समावेश है। पिछली पाँच शताब्दियों से अधिक समय से भारत के रीति–रिवाज, भाषाएँ, प्रथाएँ और परंपराएँ इसके एक दूसरे से परस्पर संबंधों में महान विविधताओं का एक अद्वितीय उदाहरण देती है। भारत कई धार्मिक प्रणालियों, जैसे कि हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म जैसे धर्मों का जनक है। इस मिश्रण से भारत में उत्पन्न हुए विभिन्न धर्म और परम्पराओं ने विश्व के अलग–अलग हिस्सों को भी प्रभावित किया है। अतः हम कह सकते है कि भारतीय संस्कृति भी कहीं ना कहीं बौद्ध धर्म से ओत–प्रोत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लाल रमण बिहारी – भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, राज प्रिंटर्स, मेरठ
2. सराओ, के0 टी0 एस0, प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म
3. पाण्डे गोविन्द चन्द्र – बौद्ध के शिक्षा विकास का इतिहास, लखनऊ, 1963
4. सिंह, डॉ0 अनिल कुमार, बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति, 2008 कला प्रकाशन, बी0 एच0 यू0 वाराणसी
5. ए0 के वारडर – इंडियन बुद्धिज्म, वाराणसी, 1970
6. डॉ0 ध्रुव कुमार – बौद्ध धर्म और पर्यावरण
7. बाबु गुलाबराय – भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, 1953, इलाहाबाद
8. शिवदत्त ज्ञानी – भारतीय संस्कृति, 2000, बम्बई

****